© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 06 , Issue : 01 | January – March 2019

मुंशी प्रेमचंद की जीवनी पर अध्ययन

Ranu Sharma
Research Scholar, Dept. of Hindi
JS University Shikhoabad, Firozabad UP

सार

मुंशी प्रेमचंद भारत के उपन्यास सम्राट माने जाते हैं जिनके युग का विस्तार सन् 1880 से 1936 तक है। यह कालखंड भारत के इतिहास में बहुत महत्व का है। इस युग में भारत का स्वतंत्रता-संग्राम नई मंजिलों से गुजरा। प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। वे एक सफल लेखक, देशभक्त नागरिक, कुशल वक्ता, जिम्मेदार संपादक और संवेदनशील रचनाकार थे। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जब हिन्दी में काम करने की तकनीकी सुविधाएं नहीं थीं फिर भी इतना काम करने वाला लेखक उनके सिवा कोई दूसरा नहीं हुआ।

मुख्य शब्दः उपन्यास, भारत, स्वतंत्रता, कथाकार, साहित्य इत्यादि।

प्रस्तावना

प्रेमचंद हिंदी साहित्य के प्रमुख कथाकार माने जाते हैं। इनका जन्म 31 जुलाई सन 1880 ई. में वाराणसी के समीप लमही नामक गांव में हुआ। इनके बचपन का नाम धनपत राय था। इनके पिता अजायब राय डाकखाने में किरानी थे। जब उनकी आयु मात्र सात वर्ष थी तभी इनकी मां श्रीमती आनंदीबाई का देहांत हो गया। इनके पिता ने दूसरा विवाह कर लिया, परंतु विमाता इन्हें प्रेम की बजाय घृणा की दृष्टि से देखती थी। इन्होंने अपनी पर प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही प्राप्त कि। 15 वर्ष की आयु में उनका विवाह कर दिया गया, परंतु वह पत्नी के लड़ाकू प्रवृत्ति की होने के कारण सफल नहीं रहा। उन्होंने जैसे-तैसे दसवीं कक्षा पास करके प्राथमिक स्कूल में अध्यापन कार्य किया। नौकरी के साथ-साथ उन्होंने बीए की परीक्षा पास की और शिक्षा विभाग में डिप्टी स्पेक्टर नियुक्त हुए। इस बीच 1905 ई. में इन्होंने बाल-विधवा शिवरानी देवी से दूसरा विवाह किया। शिवरानी देवी से इनका विवाह सफल रहा। इनकी पत्नी ने इनका कदम-दर-कदम सहयोग किया।

मुंशी प्रेमचंद की शिक्षा

प्रेमचंद जी की प्रारम्भिक शिक्षा, सात साल की उम्र से, अपने ही गाँव लमही के, एक छोटे से मदरसा से शुरू हुई थी। मदरसा मे रह कर, उन्होंने हिन्दी के साथ उर्दू व थोडा बहुत अंग्रेजी भाषा का भी ज्ञान प्राप्त किया।

ऐसे करते हुए धीरे-धीरे स्वयं के, बल-बूते पर उन्होंने अपनी शिक्षा को आगे बढाया, और आगे स्नातक की पढ़ाई के लिये , बनारस के एक कालेज मे दाखिला लिया। पैसो की तंगी के चलते अपनी पढ़ाई बीच मे ही छोड़नी पड़ी। बड़ी कठिनाईयों से जैसे-तैसे मैट्रिक पास की थी। परन्तु उन्होंने जीवन के किसी पढ़ाव पर हार नही मानी, और 1919 मे फिर से अध्ययन कर बी.ए की डिग्री प्राप्त करी।

मुंशी प्रेमचंद का विवाह

प्रेमचंद जी बचपन से, किस्मत की लड़ाई से लड़ रहे थे . कभी परिवार का लाड-प्यार और सुख ठीक से प्राप्त नही हुआ। पुराने रिवाजो के चलते, पिताजी के दबाव मे आकर , बहुत ही कम उम्र मे पन्द्रह वर्ष की उम्र मे उनका विवाह हो गया। प्रेमचंद जी का यह विवाह उनकी मर्जी के बिना , उनसे बिना पूछे एक ऐसी कन्या से हुआ जोकि, स्वभाव मे बहुत ही झगड़ालू प्रवति की और, बदसूरत सी थी। पिताजी ने सिर्फ अमीर परिवार की कन्या को देख कर, विवाह कर दिया।

थोड़े समय मे, पिताजी की भी मृत्यु हो गयी, पूरा भार प्रेमचंद जी पर आ गया। एक समय ऐसा आया कि, उनको नौकरी के बाद भी जरुरत के समय अपनी बहुमूल्य वास्तुओ को बेच कर, घर चलाना पड़ा। बहुत कम उम्र मे ग्रहस्थी का पूरा बोझ अकेले पर आ गया। उसके चलते प्रेमचंद की प्रथम पत्नी से, उनकी बिल्कुल नही जमती थी जिसके चलते उन्होंने उसे तलाक दे दिया। और कुछ समय गुजर जाने के बाद, अपनी पसंद से दूसरा विवाह , लगभग पच्चीस साल की उम्र मे एक विधवा स्त्री से किया। प्रेमचंद जी का दूसरा विवाह बहुत ही संपन्न रहा उन्हें इसके बाद, दिनों दिन तरक्की मिलती गई।

मुंशी प्रेमचंद की कार्यशैली

प्रेमचंद जी अपने कार्यो को लेकर, बचपन से ही सक्रीय थे। बहुत कठिनाईयों के बावजूद भी उन्होंने, आखरी समय तक हार नही मानी। और अंतिम क्षण तक कुछ ना कुछ करते रहे, और हिन्दी ही नही उर्दू मे भी, अपनी अमूल्य लेखन छोड़ कर गये।

लमही गाँव छोड़ देने के बाद, कम से कम चार साल वह कानपुर मे रहे, और वही रह कर एक पत्रिका के संपादक से मुलाकात करी, और कई लेख और कहानियों को प्रकाशित कराया। इस बीच स्वतंत्रता आदोलन के लिये भी कई कविताएँ लिखी।

धीरे-धीरे उनकी कहानियों,कविताओं, लेख आदि को लोगो की तरफ से, बहुत सरहाना मिलने लगी . जिसके चलते उनकी पदोन्नति हुई, और गौरखपुर तबादला हो गया। यहा भी लगातार एक के बाद एक प्रकाशन आते रहे, इस बीच उन्होंने महात्मा गाँधी के

आदोलनो मे भी, उनका साथ देकर अपनी सक्रीय भागीदारी रखी। उनके कुछ उपन्यास हिन्दी मे तो, कुछ उर्दू मे प्रकाशित हुए।

उन्नीस सौ इक्कीस मे अपनी पत्नी से, सलाह करने के बाद उन्होंने, बनारस आकर सरकारी नौकरी छोड़ने का निर्णय ले लिया। और अपनी रूचि के अनुसार लेखन पर ध्यान दिया। एक समय के बाद अपनी लेखन रूचि मे, नया बदलाव लाने के लिये उन्होंने सिनेमा जगत मे, अपनी किस्मत अजमाने पर जोर दिया, और वह मुंबई पहुच गये और, कुछ फिल्मो की स्क्रिप्ट भी लिखी परन्तु, किस्मत ने साथ नही दिया और, वह फ़िल्म पूरी नही बन पाई।जिससे प्रेमचंद जी को नुकसानी उठानी पड़ी और, आख़िरकार उन्होंने मुंबई छोड़ने का निर्णय लिया और, पुनः बनारस आगये। इस तरह जीवन मे, हर एक प्रयास और मेहनत कर उन्होंने आखरी सास तक प्रयत्न किये।

प्रेमचंद जी की प्रमुख रचनाओ के नाम

देखा जाये तो, मुंशी प्रेमचंद जी की सभी रचनाये प्रमुख थी। किसी को भी अलग से, संबोधित नही किया जा सकता। और उन्होंने हर तरह की अनेको रचनाये लिखी थी जो, हम बचपन से हिन्दी मे पढ़ते आ रहे है ठीक ऐसे ही, उनके कई उपन्यास नाटक कविताएँ कहानियाँ और लेख हिन्दी साहित्य मे दिये गये है। जैसे- गोदान,गबन,कफ़न आदि अनगिनत रचनाये लिखी है।

पुरस्कार

मुंशी प्रेमचंद की स्मृति में भारतीय डाक विभाग की ओर से 31 जुलाई, 1980 को उनकी जन्मशती के अवसर पर 30 पैसे मूल्य का एक डाक टिकट जारी किया। गोरखपुर के जिस स्कूल में वे शिक्षक थे, वहां प्रेमचंद साहित्य संस्थान की स्थापना की गई है। इसके बरामदे में एक भित्तिलेख है। यहां उनसे संबंधित वस्तुओं का एक संग्रहालय भी है। जहां उनकी एक आवक्षप्रतिमा भी है।

उपसंहार

प्रेमचंद एक क्रांतिकारी रचनाकार थे, उन्होंने न केवल देशभक्ति बल्कि समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों को देखा और उनको कहानी के माध्यम से पहली बार लोगों के समक्ष रखा। उन्होंने उस समय के समाज की जो भी समस्याएँ थीं उन सभी को चित्रित करने की शुरुआत कर दी थी। उसमें दलित भी आते हैं, नारी भी आती हैं। ये सभी विषय आगे चलकर हिन्दी साहित्य के बड़े विमर्श बने। प्रेमचंद हिन्दी सिनेमा के सबसे अधिक

लोकप्रिय साहित्यकारों में से हैं। प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी देवी ने प्रेमचंद घर में नाम से उनकी जीवनी लिखी और उनके व्यक्तित्व के उस हिस्से को उजागर किया है, जिससे लोग अनभिज्ञ थे। उनके ही बेटे अमृत राय ने 'कलम का सिपाही' नाम से पिता की जीवनी लिखी है। उनकी सभी पुस्तकों के अंग्रेज़ी व उर्दू रूपांतर तो हुए ही हैं, चीनी, रूसी आदि अनेक विदेशी भाषाओं में उनकी कहानियां लोकप्रिय हुई हैं। अपने जीवन के अंतिम दिनों के एक वर्ष को छोड़कर उनका पूरा समय वाराणसी और लखनऊ में गुजरा, जहां उन्होंने अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया और अपना साहित्य-सूजन करते रहे। 8 अक्टूबर, 1936 को जलोदर रोग से उनका देहावसान हुआ। प्रेमचंद ने अपने जीवन के कई अद्भुत कृतियां लिखी हैं। तब से लेकर आज तक हिन्दी साहित्य में ना ही उनके जैसा कोई हुआ है और ना ही कोई और होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. ओम अवस्थी, (1982) : 'पप्रेमचन्द्र के नारी पात्र" नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 26ए, चन्द्रलोक, जवाहरनगर, दिल्ली पृष्ट-42
2. कुमारी, शेल (2001) प्रेमचन्दर की नारी भावना - राज. साहित्य अकादमी उदयपुर, पत्रिका- मधुमति
3. गुप्ता, राधेश्याम (1999) "'प्रेमचन्दोत्तर कहानी साहित्य" पी-एच.डी. राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
4. गोपाल, मदन (1991) अमर कथाकार प्रेमचन्दर - राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली
5. टंडन, प्रेमनारायण (1982)., प्रेमचंद": उनकी कृतियाँ और कला, प्रकाशक-प्रयाग पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद पृष्ठ संख्या - 3-9
6. तिवाड़ी, सुरेन्द्रनाथ (1999) प्रेमचन्द्र और शरतचन्द के उपन्यास- मनुष्य का बिम्ब, सुषमा पुस्तकालय कृष्णनगर, दिल्ली
7. नाथ, सुरेन्द्र (2008) प्रेमचन्द्र की विरासत, असली विरासत है - बी.बी. सी., लन्दन
8. पलल्लव (2011) प्रेमचंद: अज्ञेय की दृष्टि में? "उपन्यास सम्राट" बहुवचन महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीष्य विश्वविद्यालय वर्धा का प्रकाशन पेज--82
9. पिंकी बाडेटिया (2010) अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, जयपुर अक्टुबर 2010 वॉल्यूम 1 पेनम 13 पेज 140-145
10. प्रेमचन्द (2009) गबन - मनोज पब्लिकेशन बुराडी, नई दिल्ली